https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

लाइम गठिया

के संस्करण 2016

2. निदान व् इलाज

2.1 इस बीमारी का निदान कैसा किया जाता है?

जब भी गठिया के लिए कोई कारन न मिल रहा हो तब इस बीमारी के होने की भी सम्भावना रखनी चाहिए। जब भी इस बीमारी के होने का संदेह हो तब जांचों के द्वारा इस की पुष्टि की जा सकती है।पुष्टि के लिए रक्त की जांच अथवा जोड़ से निकाले गए पानी की जांच की जा सकती है।

रक्त जांच में बोर्रेलिया बुर्गदोर्रफेर्री के विरुद्ध एंटीबाडी एंजाइम इम्मुनो ऐसे के द्वारा देखि जा सकती हैं।यदि आई जीएम् एंटीबाडीज देखि जाती हैं,तब इनकी पुष्टि इम्मुनोब्लोट या वेस्टर्न ब्लॉट के द्वारा की जानी चाहिए।

यदि गठिया का कारन ज्ञात नहीं है व् रक्त जांच में एंटीबाडीज पायी जाती हैं व् वेस्टर्न ब्लॉट द्वारा उसकी पुष्टि की जाती है,तब वह गठिया लाइम गठिया ही कहलाता है। जब भी इस बीमारी के होने का संदेह हो तब जांचों के द्वारा इस की पुष्टि की जा सकती है।पुष्टि के लिए रक्त की जांच अथवा जोड़ से नकल गए पानी की जांच की जा सकती है।रक्त जांच में बोर्रेलिया बुर्गदोर्रफेर्री के विरुद्ध एंटीबाडी एंजाइम इम्मुनो ऐसे के द्वारा देखि जा सकती हैं।यदि आई जीएम् एंटीबाडीज देखि जाती हैं,तब इनकी पुष्टि इम्मुनोब्लोट या वेस्टर्न ब्लॉट के द्वारा की जानी चाहिए। यदि गठिया का कारन ज्ञात नहीं है व् रक्त जांच में एंटीबाडीज पायी जाती हैं व् वेस्टर्न ब्लॉट द्वारा उसकी पुष्टि की जाती है,तब वह गठिया लाइम गठिया ही कहलाता है। जोड़ से निकले पानी में इस कीटाणु की जीन देखने के लिए पोलीमरेज़ चेन रिएक्शन भी किया जा सकता है पर यह अन्य जांचों की अपेक्षा में कम भरोसेमंद होता है।ख़ास तौर से इस जाँच के द्वारा यह नहीं पाता चल पाता की मनुष्य के शरीर में अभी कीटाणु का संक्रमण हुआ है या पहले कभी संक्रमण हुआ था। इस बीमारी का निदान बच्चों के विशहागया द्वारा किया जाना चाहिए।यदि एंटीबायोटिक दवाओं का असर नहीं होता तब बच्चों के गठिया रोग विषशज्ञ की सहायता से इस बीमारी का इलाज किया जाना चाहिए।

2.2 इसमें जांचों का क्या महत्व है?

सेरोलॉजिकल जांचों के आलावा,प्रज्ज्वलन दर्शाने वाले अथवा रक्त की अन्य जांचें भी की

जाती है।अन्य कीटाणुओं के कारणवश भी गठिया हो सकता है,उनकी खोज के लिए भी राकय की जांचें की जानी चाहिए।
एक बार जांचों के द्वारा लाइम गठिया की पुष्टि हो जाये,फिर इन जांचों को दोबारा करने की कोई लाभ नहीं होता क्योंकि इनसे दवाओं के असर के बारे में पता नहीं चलता।एक बार यह संक्रमण हो जाये फिर यह जांचें सफल इलाज के बाद भी कई वर्षों तक पॉजिटिव रहती हैं।

2.3 क्या इस बीमारी का इलाज /उन्मूलन है?
लाइम गठिया एक कीटाणु के द्वारा संक्रमित रोग है.इस लिए इसका इलाज एंटीबायोटिक दवाओं से किया जाता है।८०% रोगियों में १-२ बार एंटीबायोटिक्स देने से उन्मूलन हो जाता है।१०-२०%में बार बार एंटीबायोटिक्स देने से भी लाभ नहीं होता व् इनको एंटी रूमेटिक दवाओं की आवश्यकता पड़ती है।

2.4 इसके इलाज क्या है?
४ सप्ताह मुंह से एंटीबायोटिक्स या २ सप्ताह नस के द्वारा एंटीबायोटिक्स इसका इलाज हैं।८ वर्ष की आयु से अधिक बच्चों को डॉक्सीसाइक्लिन अथवा अमोक्ससिल्लिन दिया जा सकता है।यदि लंबे समय तक बच्चों के दावा लिए जाने पर संदेह हो तब नस के द्वारा सेफट्रीएक्सऑन देना अधिक लाभदायक हो सकता है।

2.5 दवाओं के दुष्प्रभाव क्या हैं?
एंटीबायोटिक्स के कारण दस्त हो सकते हैं अथवा एलर्जी हो सकती है।यह दुर्लभ व् साधारण दुष्प्रभाव हैं।

2.6 इलाज की अवधि क्या है?
एक बार ४ सप्ताह का की एंटीबायोटिक्स की अवधी पूर्ण हो जाये और गठिया जारी रहे तब ६ सप्ताह के बाद ही ऐसा कहा जा सकता है की गठिया दवाओं से ठीक नहीं हुआ है
इन लोगों में दूसरी एंटीबायोटिक दी जानी चाहिए।यदि दूसरी एंटीबायोटिक की समाप्ति के ६ सप्ताह बाद भी गठिया जारी रहे तब एंटी रूमेटिक दवाओं से इलाज शुरू किया जाना चाहिए।अधिकतर नॉन स्टेरॉइडल एंटी रूमेटिक दवाएं दी जाती हैं व् प्रभावित जोड़ के अंदर कॉर्टिकॉस्टेरॉइड्स दिए जाते हैं।

2.7 बार बार किस प्रकार की जांचों की आवश्यकता होती है?
जोड़ों की नियमित रूप से जाँच की जानी चाहिए।एक बार जोड़ ठीक हो जाएँ फिर जितना लंबा अंतराल होता जाता है,उतनी ही इस बीमारी के फिर से होने का खतरा कम हो जाता है।

2.8यह बीमारी कब तक रहती है?
८०%लोगों में यह बीमारी १-२ एंटीबायोटिक कोर्स से पूरी तरह ख़त्म को जाती है।बाकि में गठिया समाप्त होने में महीनों से साल भी लग सकते हैं।अंतत: बीमारी अपने आप ख़त्म हो जाती है।

2.9 लंबी अवधी में इस बीमारी में क्या होता है?
अधिकतर लोगों में सफल इलाज के बाद यह बीमारी बिना कोई निशान छोड़े चली जाती है।कुछ लोगों में जोड़ों में खराबी आ जाती है,जैसे जोड़ पूरी तरह न हिल पाना या समय से पहले ऑस्टीओ आर्थराइटिस होना।

2.10 क्या इससे पूरी तरह ठीक हो पाना संभव है?
हाँ,९५%से अधिक लोग पूरी तरह से ठीक हो जाते हैं।